P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जोधपुर राज्य के प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी 'प्रधान' का स्थापत्य क्षेत्र में योगदान का अध्ययन

राह बानों
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जय नारायण विश्वविद्यालय,
जोधपुर

सारांश

राज्य के अन्तर्गत शासन प्रणाली में परम्परागत शासन प्रणाली को आधार बना कर ही राज्य का प्रबन्ध किया जाता था। मारवाड़ पर मुगलों का प्रभाव इतना अधिक बढ़ने लगा की यहां पर कई पदों को सृजित किया गया। इन्ही पदों में सर्वोच पद प्रधान का होता था। प्रधान का पद एक परम्परागत पद था इसी कारण सभी राठौड़ शासकों द्वारा इसे अपनाया गया। जोधपुर की प्रषासनिक व्यवस्था का सम्पूर्ण कर्त्ताधर्त्ता प्रधान ही होता था। प्रषासन में प्रधान का पद अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था और वह राजनैतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में राजा का सलाहकार होता था। चाहे युद्ध भूमि हो अथवा सांस्कृतिक गतिविधियाँ प्रदान सदैव सक्रिय रहता था। प्रधान राज्य में सांस्कृतिक गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बिन्दू था। जोधपुर की सांस्कृतिक विरासत के उन्नयन में प्रशासन के प्रमुख अधिकारी प्रधान के योगदान को सदैव याद किया जाएगा।

मुख्य शब्द : प्रधान, प्रशासनिक, स्थापत्य

प्रस्तावना

जोधपुर राज्य राठौड़ शासकों का प्रशासनिक कीड़ा स्थली रहा है। राव सीहा के बाद राव जोधा के समय प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ स्वरूप प्रदान किया गया। यधपि मुगलों के आगमन बाद जोधपुर राज पर मुगल प्रशासन का प्रभाव पड़ा लेकिन प्रधान का पद यहां के शासकों द्वारा सृजित किया गया था। यह पद यहां के शासकों के स्वरूप सोच का प्रतीक है। जोधपुर राज्य के राठौड़ शासकों ने नव सृजित प्रदान के पद को प्रधानमंत्री के समान महत्व प्रदान किया। प्रधान वह व्यक्ति था जिसका कार्य पालिका में महत्वपूर्ण स्थान था। यह एक ऐसा पदाधिकारी था जिसकी नियुक्ति में विशेष सावधानी रखी जाती थी और इसके लिए योग्य व्यक्ति को ही चुना जाता था। नई नियुक्तियों तथा जागीर बनाने तक विभिन्न मामलों में उसकी सलाह महत्वपूर्ण मानी जाती थी। हमारे शोध पत्र का उपदेश्य जोधपुर राज्य के प्रमुख पदाधिकारी प्रधान द्वारा स्थापत्य कला के विकास हेतु प्रदान किए गए योगदान का अध्ययन करना है।

जोधपुर राज्य में प्रशासन से सम्बन्धित नियुक्त व्यक्तियों को ओहदोदारों के नाम से पुकारा जाता था। ओहदोदारों का सर्व गुण सम्पन्न होना अति आवश्यक था और नियुक्ति व्यक्ति का ईमानदार एवं अनुभवी होना भी जरूरी होता था। इसी कारण मारवाड़ की स्थिति को सुदृढ़ बनाने में इन ओहदोदारों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती थी। राज्य के प्रत्येक विभाग पर एक अधिकारी को नियुक्त किया जाता था। मारवाड़ में कुछ ऐसे भी अधिकारी नियुक्त थे जिनकी नियुक्ति वंशानुगत थी।[1]

जोधपुर राज्य पर प्रारम्भ से ही राठौड़ वंश का अधिकार रहा। राठौड़ राजवंश के प्रथम शासक राव सीहा से लेकर परवर्ती शासकों के प्रयास के बाद जोधपुर पर स्थायी शासन की स्थापना की गई। राज्य के राठौड़ शासकों द्वारा कई अधिकारियों की नियुक्ति की गई जिसमें बख्शी, दीवान एवं खानासामा, प्रधान जैसे पद सम्मिलित है।

जोधपुर राज्य का सबसे प्रमुख अधिकारी प्रधान होता था। प्रधान का पद एक वंशानुगत पद माना जाता था। मारवाड़ की प्रशासन व्यवस्था को सही ढंग से चलाने के लिए सभी शासकों द्वारा इस पद को पूर्ण रूप से स्वीकार गया। इसी कारण राज्य का सर्वोच्च अधिकारी प्रधान को ही माना जाता था। राज्य में सभी शासकों की स्वीकृति प्राप्त होने के कारण प्रधान का पद महत्वपूर्ण माना जाता था।[2]

प्रधान शब्द का यदि हम अर्थ पता करे तो इसका अर्थ सर्वेश्रेष्ट होता है। प्रधान की सर्वेश्रेष्टता के कारण राज्य में उसकी सदैव उपयोगिता बनी रही। मारवाड़ के प्रशासन से सम्बन्धित समस्त कार्यो का संचालन एवं नियत्रंण प्रधान द्वारा ही किया जाता था। प्रधान राजा का कृपा पात्र एवं विश्वसनीय व्यक्ति होता था। प्रधान राज्य के विशिष्ट मामलें में भी शासकों का सहयोगी एवं सलाहकार माना जाता था।[3]

मारवाड़ के प्रमुख अधिकारी प्रधान का राज्य के प्रशासन के अलावा सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अपनी भूमिका का निर्वाह किया। मारवाड़ के शासकों की भी राज्य के सभ्यता एवं सांस्कृतिक में अत्यधिक रूचि रही जिसके चलते इन शासकों द्वारा अपने शासन काल में कई निर्माण कार्य करवाए गए। विशेष रूप से महलों, भवनों, एवं तालाबों का निर्माण करवाते समय प्रधान की सलाह ली जाती थी। महाराजा सूरसिंह ने अपने समय में सूरसागर जलाश्य का निर्माण करवाया। इसके बाद भी महाराजा द्वारा कई निर्माण कार्य करवाए जिसमे उनके प्रधान भाटी गोविन्ददास की भूमिका सराहनीय रही। महाराजा सूरसिंह के समय भवन निर्माण के अन्तर्गत प्रधान भाटी की देख–रेख में सूरसागर जलाश्य के किनारे पर कोट तथा महल का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ।

महाराजा सूरसिंह के प्रधान भाटी गोविन्ददास का निर्माण कार्यो के साथ कला एवं साहित्य में भी काफी रूची रही। भाटी द्वारा चारणों को बड़ा सम्मान प्राप्त था। भाटी गोविन्दास जब इस पद पर नियुक्त थे तब चारणों के अलावा रतनरासों ग्रन्थ के रचियता माला सादू भी उनसे सेवा प्राप्त कर रहे थे।[4]

महाराजा सूरसिंह के शासन काल में उनके द्वारा सरदारों तथा पासवनों के लिए आवास गृह का निर्माण करवाया। इन आवास गृह के निर्माण कार्य में प्रधान भाटी गोविन्ददास का सहयोग सदैव प्ररेणा का स्त्रोत रहा।[5]

महाराजा सूरसिंह के समय के भवन निर्माण में देवलों का प्रमुख महत्व रहा। इनका निर्माण कार्य मन्दिर शैली से किया जाता था। महाराजा सूरसिंह के बाद महाराजा गजसिंह के समय में कई निर्माण कार्य हुए जिसमें सबसे प्रमुख निर्माण कार्य अपने पिता सूरसिंह का देवल था। यह देवल आज भी मण्डोर में स्थित है। महाराजा जसवन्तसिंह के प्रधान राजसिंह कूपावत थे। राजसिंह कूपावत को सांस्कृतिक कार्यो के साथ–साथ भवन निर्माण का भी अत्यधिक ज्ञान था।[6]

महाराजा जसवन्तसिंह के समय जोधपुर दुर्ग तथा तलहटी के महल का निर्माण कार्य तथा दीवानखाना का निर्माण कार्य प्रधान राजसिंह कूपावत की देखरेख में सम्पन्न हुआ। प्रधान राजसिंह कूंपावत के समय आसोप में स्थित सभा मण्ड़ल का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। राजसिंह कूंपावत ने पीलाना नामक तालाब पर देवडी माता की एक छतरी बनवाई। महाराजा सूरसिंह के समय सूरसागर में जो बाग बगीचे लगवाए उन्है लाल बाग के नाम से आज भी जाना जाता है।[7]

महाराजा जसवन्तसिंह के एक ओर प्रधान आसकरण निबांवत ने महाराजा से प्राप्त जागीर सालवा कला नामक गाँव में पीचका बेरा खुदवाया था। प्रधान आसकरण नीबांवत का यह निर्माण कार्य अत्यधिक सराहनीय रहा। प्रधान द्वारा खुदवाए गए इस बेरे का मुख्य उपदेश्य गाँव में पेयजल की समस्या को खत्म करना था ताकि लोगो को पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध हो सके।[8]

महाराजा मानसिंह के समय उनके प्रधान सालमसिंह थे। महाराजा द्वारा भवन निर्माण के अन्तर्गत महामन्दिर एवं उदयमंदिर का निर्माण करवाया गया। महाराजा के प्रधान सालमसिंह पोकरण के ठाकुर थे। प्रधान सालमसिंह द्वारा पोकरण ठिकाणें के किले के पास सालमसागर का निर्माण करवाया गया। इसी तालाब के कारण ठिकाणें में जल की उचित व्यवस्था हो पाई। सालमसागर के निर्माण कार्य के बाद दुर्ग में जल की आपुर्ति होने लगी। प्रधान सालमसिंह द्वारा करवाया गया यह निर्माण कार्य एक जन उपयोगी कार्य सिद्ध हुआ। यह निर्माण कार्य सालमसिंह की अन्य उपलब्धियों में से एक महत्वपुर्ण उपलब्धि मानी जाती है।[9]

सालमसागर तालाब की ओर वही पर पंचमुखा मन्दिर भी है। इस मन्दिर का निर्माण प्रधान ठाकुर सालमसिंह द्वारा करवाया गया था। यह एक शिव मन्दिर है। इस मन्दिर के निर्माण की शैली मध्यकालीन भारत मे प्रचलित शैली से लगभग मिलती जुलती है। इस मन्दिर का निर्माण एक बडे से चबूतरे पर किया गया जिसके पास विशाल बगीचा भी लगा हुआ था।

पोकरण के चारों ओरी चट्टानी क्षेत्र है जो ढ़लानदार है। सालमसागर के पूर्वी एवं पश्चिमी हिस्सों में विशाल घाट मोजूद है। जहाँ एक ओर सीढ़िया बनाई गई है। जिससे सालमसागर कितना गहरा है उसका अनुमान लगाया जा सकता है। तालाब के पास लगी चौकिया पर तथा घाट पर कई पशुओं की मूर्तियाँ अंकित है।[10]

मारवाड़ के अन्तगर्त यहाँ की कई गतिविधियों में यहाँ के प्रधान की भूमिका दिखाई पड़ती है। मारवाड़ मे इनकी सौर्यता के गुण गाए जाते है तथा इन पोकरण ठाकुरों की प्रशंसा हेतु कई गीत लिखे गए है। इन गीतों को लिखने वाले चारणों को भेंट के रूप में कई वस्तुए प्रदान की जाती थी। राज्य के अन्तर्गत होने वाले अन्य उत्सवों एवं अवसरों पर नजर निछावर करने का कार्य प्रधान द्वारा ही किया जाता था जो उसके लिए शौभाग्य की बात होती थी।[11]

मारवाड़ के इन शासकों के प्रधान द्वारा कई भवन के निर्माण एवं छतरियों के निर्माण कार्य में योगदान रहा। इन सभी शासकों द्वारा जितने भी निर्माण कार्य करवाए उनमें निम्न एवं उच्च वर्ग के आवास गृह सम्मिलित है। मारवाड़ में सामंतो एवं जागीदारों के लिए जिस तरह के आवास गृह बनाए जाते उसी तरह उच्च वर्ग के आवास गृह इन ठाकुरों के लिए बनाए जाते थे।[12]

उच्च वर्ग के आवास गृह की दिवारों पर चित्रकारी भी की जाती थी। इन महलों की जालीयों पर नक्कासी की जाती थी तथा झरोखे भी बनाए जाते थे। यह निर्माण शैली मुगल स्थापत्य कला से बिल्कुल मिलती–जुलती है। चित्रकारी के अन्तर्गत पुष्प एवं बुटों को भी बनाया जाता था। यह उच्च आवास गृह विशाल

एवं सुदृढ़ होते थे। उन्हें मजबुत पत्थर से बना कर उस पर प्लास्टर किया जाता था फिर उसके बाद संगमरमर का पत्थर लगाया जाता था। [13]

प्रधान द्वारा प्रशासनिक क्षेत्र में अपने दायित्व का पुर्ण रूप से निर्वाह किया गया। वही सांस्कृतिक गतिविधियों में भी उसकी अहम भूमिका रही। प्रधान द्वारा राज्य सम्बन्धित समस्त निर्माण कार्य जिसमें दुर्ग निर्माण, भवन निर्माण तथा धार्मिक कार्यो के अन्तर्गत मंदिर निर्माण में शासक द्वारा सदैव प्रधान की सलाह ली जाती थी। इसके अलावा भवन निर्माण में वो भवन जो खण्डित हो गए उनकी मरम्मत करवाना एवं उसे पुनः पक्का करवाना एवं नवीन भवनों का निर्माण करवाना सम्मिलित था। इन सभी कार्यो में प्रधान को शासकों की और से पुर्ण योगदान प्राप्त होता रहा।[14]

उद्देश्य

प्रधान राजा प्रशासन के मध्य एक महत्वपूर्ण कडी था । प्रधान से सम्बधित महत्वपूर्ण पहलुओं पर अभी तक नगण्य प्रकाश डाला हैं। मारवाड़ के प्रशासन में प्रधान पद की महता और उसके कार्य का विवेचनात्मक अध्ययन करना ही हमारा प्रमुख हैं ।

निष्कर्ष

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि जोधपुर राज्य के प्रधान पद पर आसीन महानुभावों ने केवल प्रशासनिक एवं सैनिक क्षेत्र को ही नही अपितु सांस्कृतिक क्षैत्र में स्थापत्य को उन्नयन करने में महत्वपुर्ण भुमिका निभाई।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. *भाटी हुकमासिंह (सं.)य मारवाड़ री ख्यात, पृ.30 राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी एवं महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र जोधपुर, 2000*
2. *वही,*
3. *भाटी हुकमासिंह (सं.)य राठौड़ा री ख्यात, प्रथम भाग पृ. 200 इतिहास अनुसंधान संस्थान जोधपुर, 2007*
4. *भाटी नारायणसिंह (सं.)य मारवाड़ रा परगनां री विगत, प्रथम भाग पृ.561–565, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर 1968*
5. *राठौड़ विक्रमसिंहय मारवाड़ का सांस्कृतिक इतिहास, पृ.13, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर 1999*
6. *भाटी हुकमसिंहय भाटी वंश का गौरमय इतिहास, द्वितीय भाग,पृ.20,24,29 इतिहास अनुसंधान चौपासनी, जोधपुर 2003*
7. *वही,*
8. *गुन्दोज विक्रमसिंह, सुवाणा भीमसिंहय कुंपावतों का वृहत इतिहास पृ. 105, 107, 108, भगवती प्रकाशसन संस्थान, जोधपुर 2008*
9. *मित्र मीराय महाराजा अजीतसिंह एवं उनका युग, पृ. 278, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1973*
10. *वही,*
11. *चमनकरनोत, नरपतसिंहय भारत कुलभूषण, पृ. 113, 115, श्री जिनसिद्ध सूरी शोध संस्थान, जिला जालौर 1996*
12. *भाटी नारायणसिंह (सं.)य पूर्वोक्त पृ.571, 572,*
13. *शेखावत अशोक कुमार सिंहय पोकरण का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 200, अप्रकाशित, 2008, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर*
14. *भाटी नारायणसिंह (सं.)य मारवाड़ रा परगनां री विगत, द्वितीय भाग पृ.311–316, 1969*
15. *शेखावत अशोक कुमार सिंहय पूर्वोक्त,पृं.188, 199–200,*
16. *वहीं, पृं. 204*
17. *वही,*
18. *राठौड़ विक्रम सिंहय पूर्वोक्त, पृं. 20*
19. *भाटी नारायणसिंह (सं.)य पूर्वोक्त, पृ.561–565,*
20. *बागड़िया विजयलक्ष्मीय जोधपुर राज्य के नरेशों का सांस्कृतिक उन्नयन में योगदान पृ. 57, अप्रकाशित 2011*
21. *भाटी हुकमसिंहय भाटी वंश का गौरमय इतिहास, द्वितीय भाग पृ.20,24,29*
22. *राठौड़ विक्रमसिंहय पूर्वोक्त, पृ. 13.*